जब हमारे रिश्तेदार आए

सिंथिया, चित्र : स्टेफेन, हिंदी : विदूषक

हमारे रिश्तेदारों की स्टेशन वैगन में से असली मोटरकार की खुशबू आती थी. वो देखने में एक इन्द्रधनुष जैसी थी और उसमें काफी भीड़ समा सकती थी.

यह एक बड़ी खुशनसीब बात थी! क्योंकि एक दिन सुबह चार बजे बहुत से लोग – छोटे-बड़े, मोटे-पतले, उस स्टेशन वैगन में बैठे और फिर उत्तर की ओर पहाड़ों पर अपने रिश्तेदारों के यहाँ गए. सभी खुश थे और अच्छे मूड में थे.

रिश्तेदारों को घर में जहाँ जगह मिली वे वहीँ ठहर गए. उन्होंने हरेक को अपने गले लगाया और अपनी हंसी और संगीत से सबका दिल जीता. फिर वो वहां कई हफ्ते ठहरे.

जब हमारे रिश्तेदार आए

सिंथिया, चित्र : स्टेफेन, हिंदी : विदूषक

उस साल गर्मियों में रिश्तेदार आए. वे वर्जिनिया से आए. जब उन्होंने अपनी यात्रा शुरू की तब उनके बगीचे के अंगूर बैंगनी हो चुके थे, फिर भी वो अभी तोड़ने के लायक नहीं पके थे.
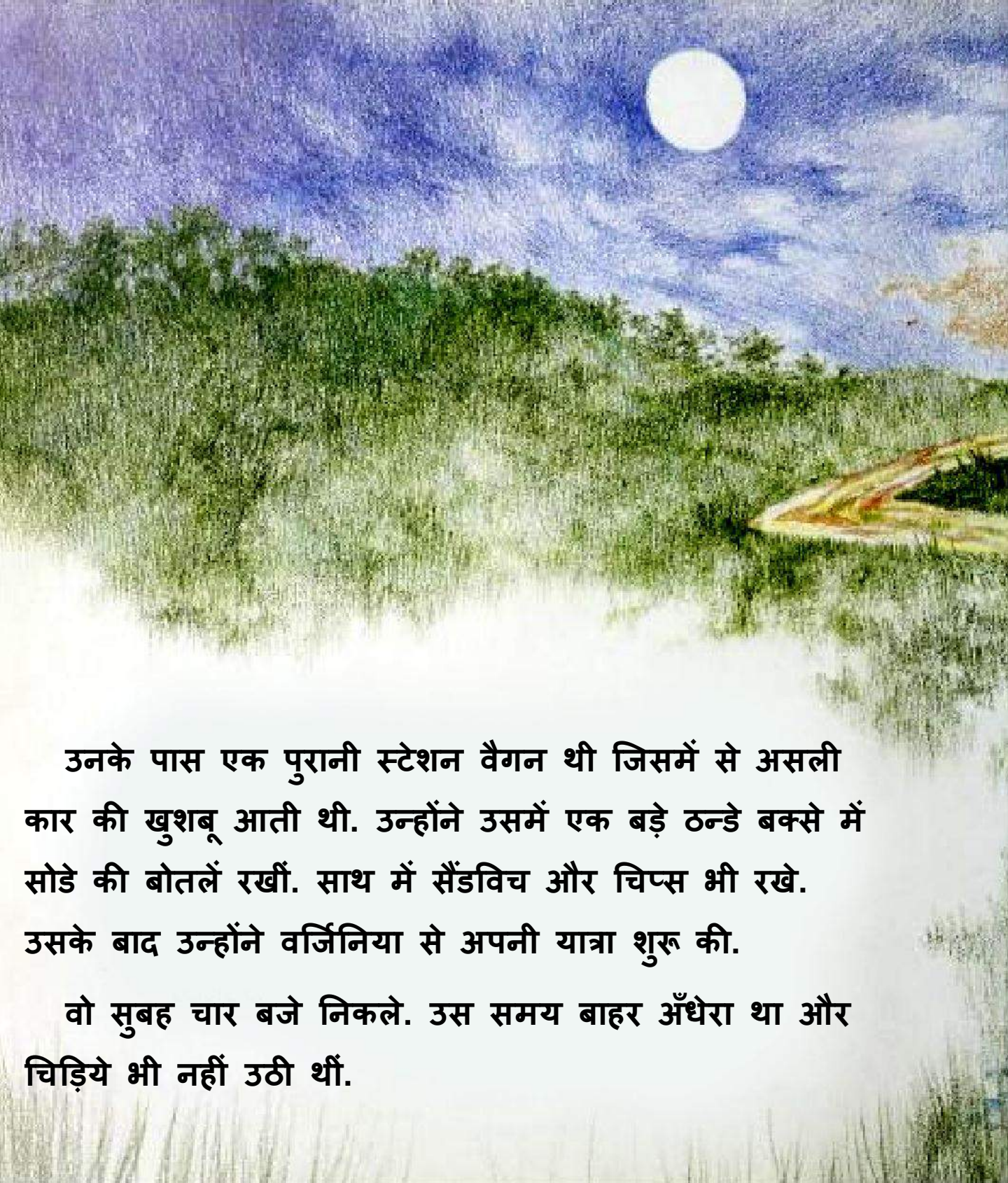
उनके पास एक पुरानी स्टेशन वैगन थी जिसमें से असली कार की खुशबू आती थी. उन्होंने उसमें एक बड़े ठन्डे बक्से में सोडे की बोतलें रखीं. साथ में सैंडविच और चिप्स भी रखे. उसके बाद उन्होंने वर्जिनिया से अपनी यात्रा शुरू की.

वो सुबह चार बजे निकले. उस समय बाहर अँधेरा था और चिड़िये भी नहीं उठी थीं.
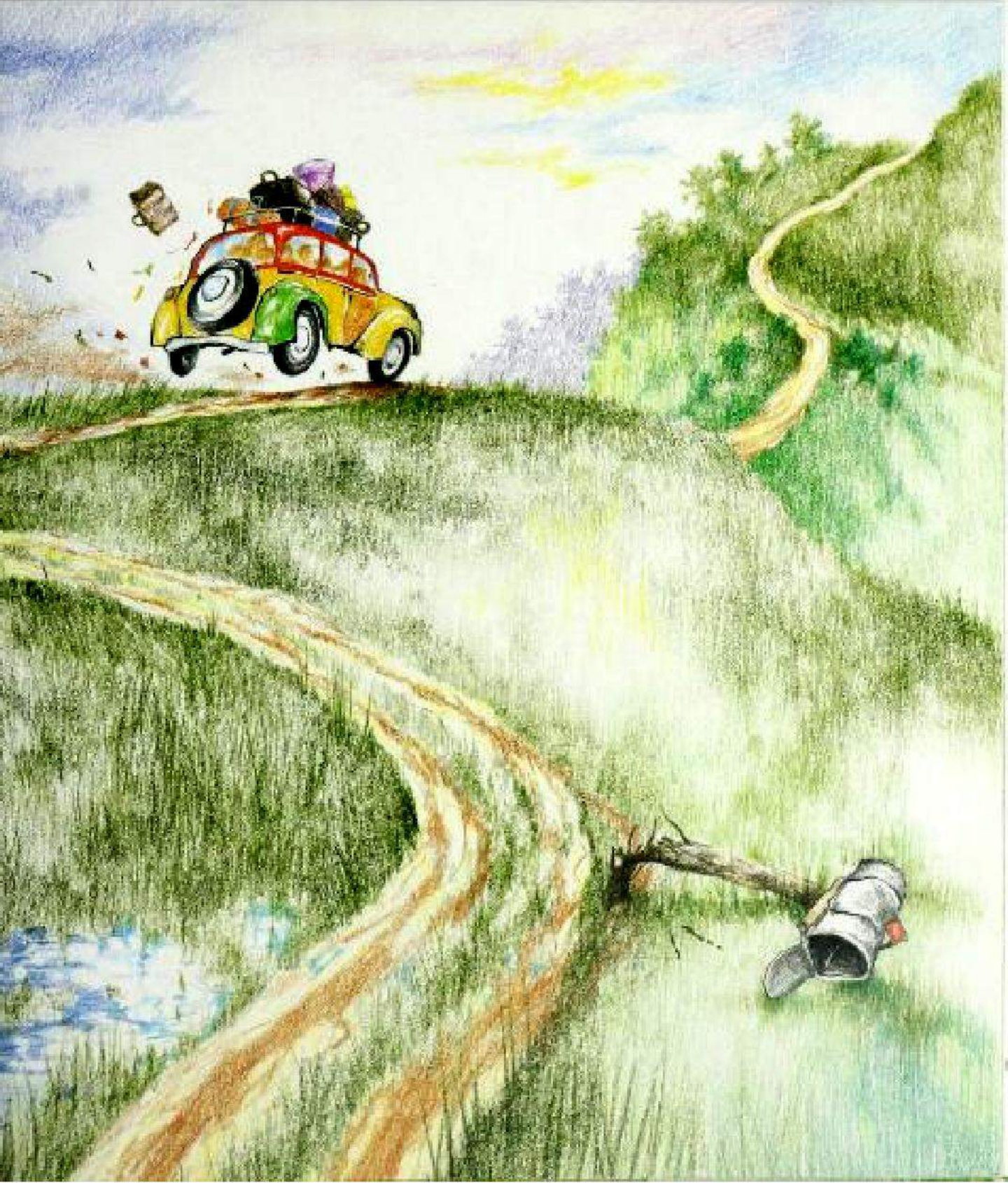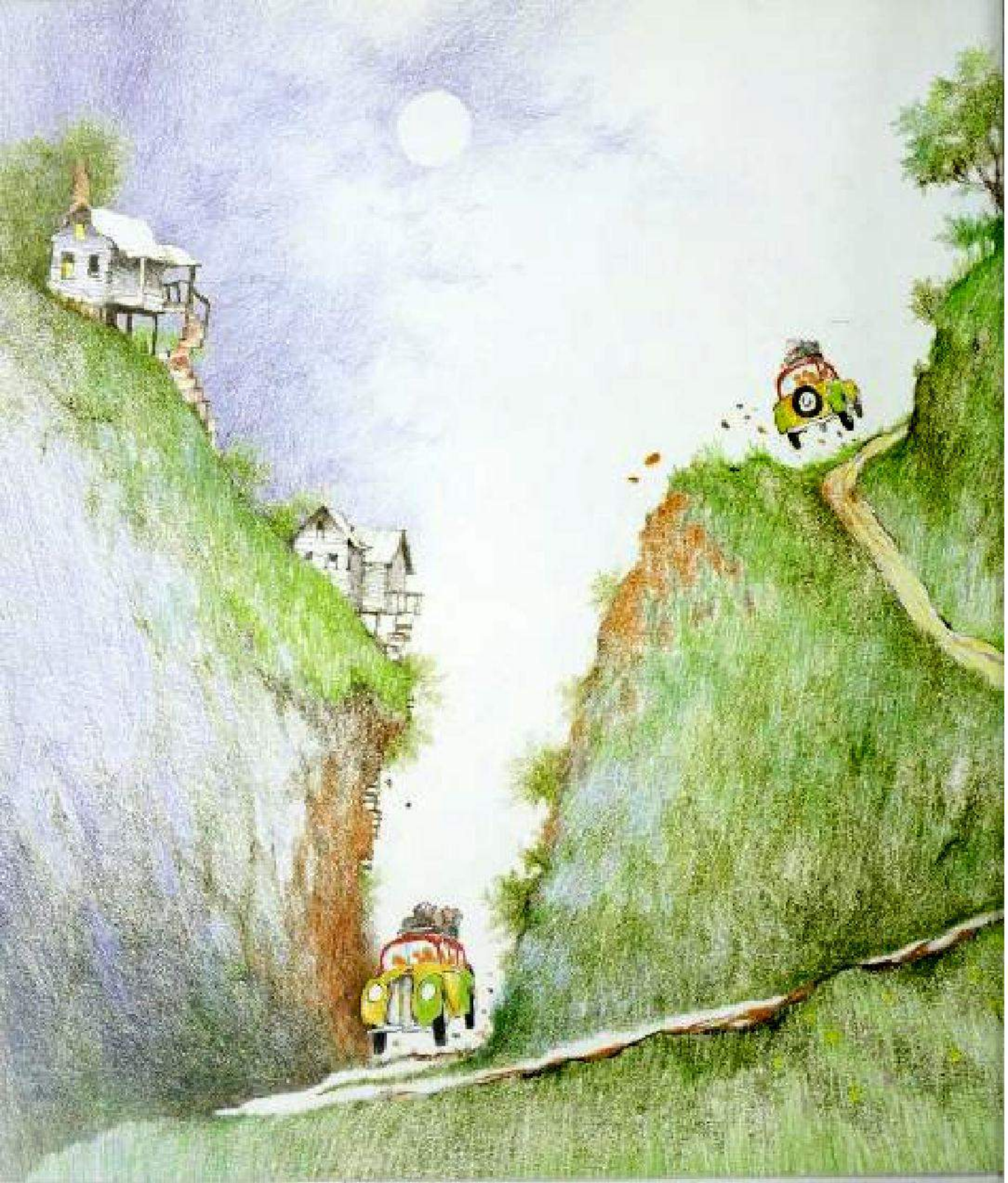
पूरे दिन वो स्टेशन वैगन में यात्रा करते रहे. रास्ते में वो अजीब किस्म में घर और अलग तरह के पहाड़ देखते रहे. उन्हें लगातार अपने बैगनी अंगूरों और वर्जिनिया की याद भी सताती रही. पर वो हमें भी याद करते रहे. और हम लोग उनके आने की राह देखते रहे.

रास्ते में उन्होंने सभी सोडे की बोतलें पी डालीं और सारे चिप्स खा कर ख़त्म कर डाले. उन्होंने बहुत लम्बी यात्रा तय की और अंत में हमारे घर पहुंचे.

आने के बाद एक-दूसरे से गले मिलने का समय था.

सब लोग एक-दूसरे से लिपटकर गले मिले.

जो लम्बी यात्रा करके वर्जिनिया से आए थे, वे थके थे, और उनके कपड़े मुसे थे, पर उनकी आँखों में आंसू थे.

वो घंटों तक हमें गले लगाते रहे.

फिर वो घर के अन्दर घुसे.

वे सब हंस रहे थे और उनके चेहरे चमक रहे थे.

वो दरवाज़े के पास हमें गले लगा रहे थे.

किचन से मुख्य दरवाज़े तक के रास्ते में आपको लोग चार बार गले लगाते.

ऐसे थे हमारे रिश्तेदार!
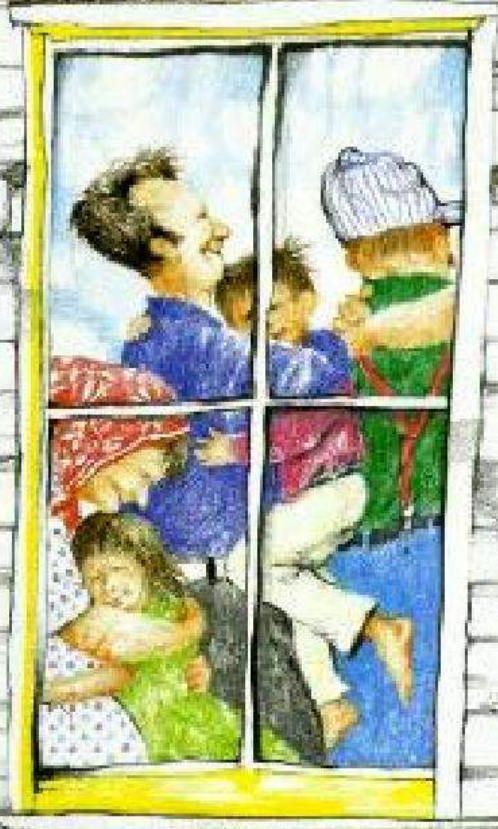
फिर हम सबने मिलकर, छककर खाना खाया. इतने ज्यादा लोग थे कि दो तीन मेज़ भरकर लोगों खाने के बाद ही हमारी बारी आई. फिर सबने दिल खोलकर बातें कीं. अक्सर हम दो-तीन के समूह में होते.

हमारे रिश्तेदारों को अच्छे पलंगों की कोई ख़ास इच्छा नहीं थी. एक तरह से यह अच्छा भी था, क्योंकि हमारे घर में एक्स्ट्रा पलंग थे ही नहीं. इसलिए उनमें से कुछ हमारे पलंगों पर ही सोए और कुछ ज़मीन पर सोए. सोते समय लोगों के हाथ एक-दूसरे को छू रहे होते थे.

जब इतनी सारी साँसें एक-साथ चल रही हों, तो घर में सोना कुछ मुश्किल ज़रूर था.

हमारे रिश्तेदार कई हफ्ते हमारे साथ रहे. उन्होंने बगीचे की सफाई में हमारी मदद की. अगर उन्हें कोई टूटी या ख़राब चीज़ दिखती वो वो उसे दुरुस्त करते, उसकी मरम्मत करते.

उन्होंने हमारी सभी स्ट्रॉबेरी और तरबूज खाकर ख़त्म कर डाले.

उन्होंने कहा कि जब हम वर्जिनिया उनके यहाँ आयें तब हम वहां उनके सब अंगूर और नाशपाती खा सकते थे.
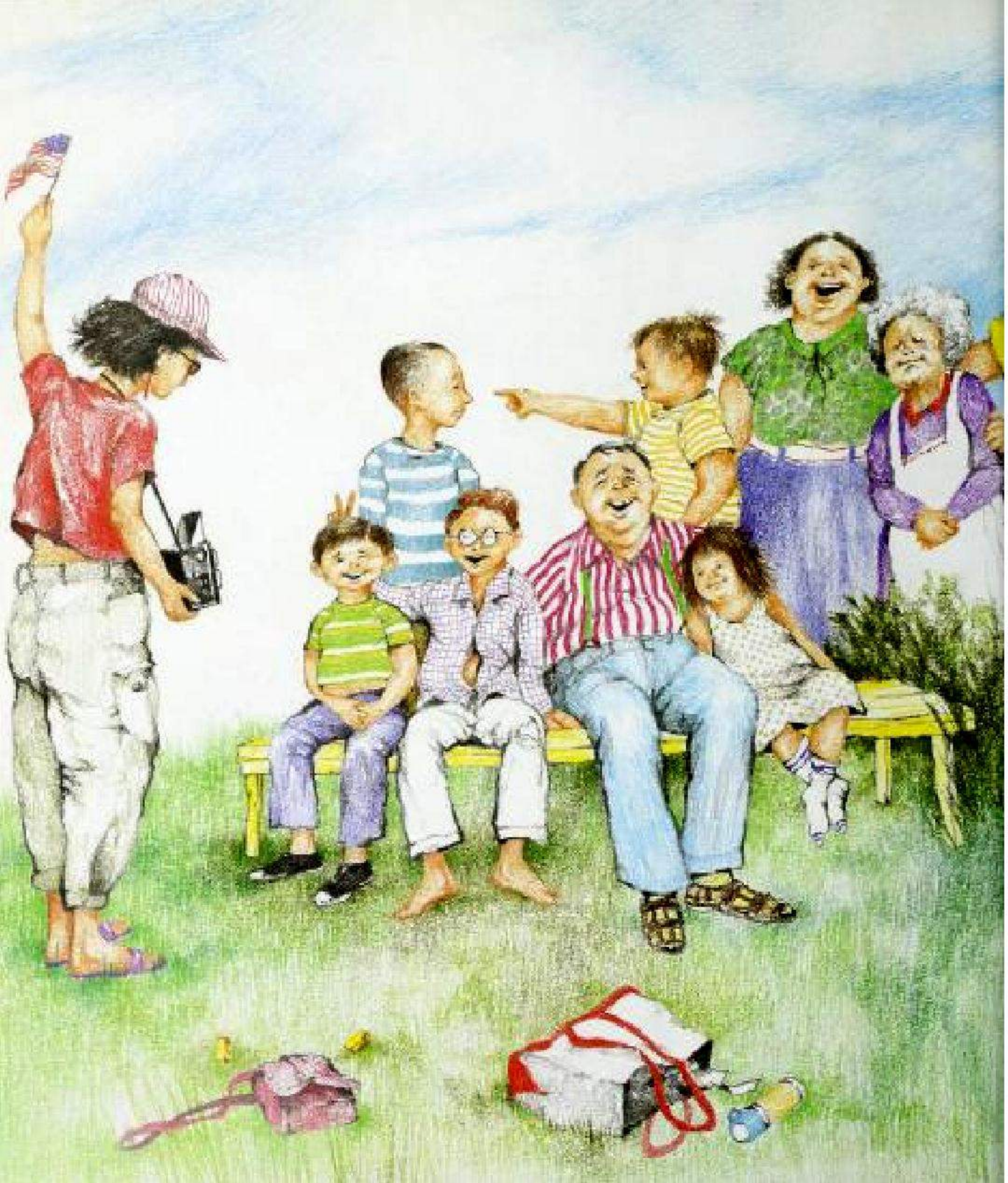
पर हम लोग वर्जिनिया को बहुत अच्छी जगह नहीं मानते थे. हम लोग बहुत व्यस्त थे एक-दूसरे से गले मिलने में, खाने में और बातें करने में.

फिर बहुत दिनों के बाद हमारे रिश्तेदारों ने एक दिन अपने ठन्डे बक्से को भरा और फिर वो सुबह चार बजे वर्जिनिया के लिए वापिस रवाना हुए. हम लोग सब एक लाइन में अपने पजामों में खड़े थे उनसे अँधेरे में अलविदा कहने के लिए.

हमने रिश्तेदारों की स्टेशन वैगन को अँधेरे में विलीन होते देखा. फिर हम लोग सोने के लिए पलंग में वापिस आए. अब हमें पलंग बहुत खाली और बड़ा लगने लगा. फिर हमें नींद आ गई.

हमारे रिश्तेदारों पूरे दिन स्टेशन वैगन में यात्रा करते रहे.

यात्रा के दौरान वे अजीब घरों और अलग तरह के पहाड़ों को निहारते रहे.

वो अपने गहरे बैंगनी रंग के अंगूरों के बारे में सोचते रहे जो वर्जिनिया के घर में उनका इंतज़ार कर रहे थे.

हमारे रिश्तेदारों ने हमारे बारे में भी सोचा.

हमें उनकी याद आ रही थी उन्हें हमारी.

अंत में जब वे वर्जिनिया अपने घर पहुंचे तब वे सभी अपने मुलायम गद्दों पर लेटे और अगले साल गर्मियों के बारे में सपने देखने लगे.